जीवन की परेशानियों में से कुछ बातें निरन्तर हमें परेशान करती रहती हैं। इन परेशानियों का समाधान मनोचिकित्सा के द्वारा भी संभव है। ये पद्धति अचेतन के उपचार के रूप में गहरे स्तर पर लागू होती हैं।

आज की स्थिति ऐसी हो गई है जिसमें परेशानियों की अधिकता और विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की कुछ परिसीमाओं को देखकर व्यक्ति एक चिकित्सा प्रणाली तक स्वयं को सीमित रखने की अपेक्षा समग्र चिकित्सा प्रणाली को उपयोग में ला रहा है। अतः इस शोध में तीनों विधाओं (संगीत, योग, मनोचिकित्सा) की कुछ प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया गया है जोकि अपने आप में अनूठा प्रयोग है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Date, K.K. and Bhagat - 1977
2. Cooper, M.J. - 1979
3. Bali, Lekh Raj - 1979
4. Green Elmes - 1971

बिहार में सुशासन : एक अध्ययन

संजय कुमार सुमन*

प्रजातांत्रिक शासन पद्धति के पार्दुभाव के बाद प्रशासन कला का व्यापक रूप में क्षेत्र विस्तार हुआ, इसमें सभी नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं और संगठनों, विधायिका और कार्यपालिका, मीडिया, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक, उद्यमियों सभी राजनीतिक दलों आदि को इनमें भागीदारी निभाने का अवसर प्राप्त हुआ। सुशासन के निष्पादन और उसे साकार करने में अपना सहयोग देने और अपने उत्तरदायित्व को रचनात्मक रूप से निभाने का मौका मिला। समाज के समुचित विकास, उसकी शांति एवं समृद्धि के लिए सुशासन पहली शर्त है। सुशासन के अंतर्गत बहुत सी चीजें आती हैं जिनमें अच्छा बजट, सही प्रबंधन, कानून का शासन, सदाचार आदि। इसके विपरित पारदर्शिता की कमी या संपूर्ण अभाव, जंगलराज, लोगों की कम भागीदारी, भ्रष्टाचार का बोलबाला आदि दुःशासन के लक्षण हैं।

आर. एस. तिवाड़ी ने अपने लेख सुशासन जनवादी प्रजातंत्र से उत्ष्ट प्रजातंत्र में कहा है कि यथार्थ सकारात्मक संभावनाओं को अपनाने के लिए निरंतर वैश्विक बदलावों को मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो वास्तविकता में केवल शासन ही कर सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि अच्छा शासन एक ऐसी घटना है जो सरकार की तीन शाखाओं, कार्यकारी, विधायी तथा न्यायिक के दक्षतापूर्ण कार्यों पर निर्भर होती है यह तभी संभव है जब सरकार का प्रत्येक अंग सत्यनिष्ठा तथा वचनबद्धता के साथ कार्य करता है। सामान्यतः जब लोग अच्छे या बुरे प्रशासन की बात करते हैं तो उनका इशारा कार्यपालिका की ओर होता है वे प्रशासन के शेष दो अंगों के महत्व को भूल जाते हैं साथ ही अन्य पक्षों को भी भूल जाते हैं जो प्रशासन के स्वरूप के निर्धारण के भागीदार होते हैं आम जनता खुद मीडिया और इसी तरह के अन्य/प्रशासन के अच्छे या बुरे स्वरूप के निर्धारण में सभी का हाथ होता है कम या अधिक।

सुशासन सरकार के तीन लक्षण हैं–पारदर्शी, जबावदेही एवं उत्तरदायी सरकार। ये तीनों ही लोकतांत्रिक सरकार के मूलाधार हैं। सरकार मुखयतः जनता के लिए कार्य करती हैं तथा उन्हें सामाजिक, आर्थिक एवं सामान्य सेवाएं प्रदान

***शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, बी0 एन0 एम0 यू0, मधेपुरा**

करती है। ये सेवाएं नागरिक केन्द्रित होने के कारण नागरिकों द्वारा बहुतायत में प्रदान की जाती है। प्रत्येक नागरिक सरकार में सेवा प्रदाता विभाग से यह अपेक्षा करता है कि उसे वांछित सेवा शीघ्र एवं बिना किसी अवरोध के समय पर मिल जाए। विकास की ओर बढ़ रहे लगभग सभी राज्य यह प्रयास कर रहे हैं कि वे अपने नागरिकों को बेहतर सेवाएँ समय पर व कुशलतापूर्वक प्रदान कर सुशासन के सिद्धातों के साकार करे। सुशासन की संकल्पना के विश्लेषण से आठ विशेषताएं–भागीदारी, आम सहमति उन्नमुख, जवाबदेह, पारदर्शी, उत्तरदायी, प्रभावी तथा सक्षम, न्यायसंगत तथा समावेशी एवं कानून के शासन का पालन करता है।

आज देश के सामने जो प्रमुख निर्णायक प्रश्न खड़े हैं उनमें अच्छा शासन या गुड गर्वनेंस सबसे महत्वपूर्ण है। देश की विशालता उसकी सामाजिक और धार्मिक विविधता, परंपराएं और विश्व स्तर पर हो रही घटनाओं का दबाव हमारे समक्ष कई तरक ही चुनौतियां प्रस्तुत कर रहा है। देश के प्रजातांत्रिक संविधान के तहत हमारी यह प्रतिबद्धता है कि भारत के हर नागरिक को गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने की व्यवस्था हो। समाज की एक स्वाभाविक अपेक्षा है कि आम आदमी को न केवल जरूरत की सभी चीजें मिले बल्कि उसके विकास और समृद्धि की संभावना भी बनी रहे। यह दायित्व आज के जनसंख्या विस्फोट के दबाव और उसके अनुरूप अपेक्षित संसाधनों की कमी के कारण एक बहुत बड़ी चुनौति बन गया है इसके लिए सक्रिय और प्रभावी शासन तंत्र अनिवार्य रूप से आवश्यक हो गया है।

अपने सामाजिक जीवन की यात्रा में मनुष्य ने आज जिस सभ्यता के उच्चतम पायदान को छुआ है उसमें समाज की व्यवस्था के लिए कुछ पद्धितियों का निर्माण क्रांतिकारी था। झुंड और कबीलों में रहने वाला आदमी शारीरिक शक्ति को ही सबकुछ मानता था और जिसमें सबसे ज्यादा ताकत होती थी उसी का रूतबा रहता था। शासन का कोई भी सिद्धान्त तब तक कारगर नहीं समझा जा सकता, जब तक कि उसे उसके समकालीन समय में न परखा जाए। पूरी दुनिया के नागरिक राष्ट्र–राज्य और इसके विभिन्न अंगों के उच्च स्तरीय परफार्मेंस की अपेक्षा रखते हैं। यह जरूरी है कि नागरिकों को राजनीतिक प्रक्रिया में स्वतंत्र, खुले और पूर्ण रूप से भाग लेने का अधिकार मिले।

सुशासन स्थाई राजनीतिक नेतृत्व, कारगर नीति निर्माण और सिविल सेवा पेशेवर लोकाचार के माध्यम से ही संभव है। सुशासन के लिए एक मजबूत नागरिक समाज, स्वतंत्र प्रेस और स्वतंत्र न्यायपालिका का होना पूर्व शर्ते हैं। समाज में ही प्रशासन की अवधारणा निहित है और समाज का स्वरूप प्रशासन के अनुरूप ढलता

है तथा प्रशासन ही समाज के स्वरूप को व्यक्तकरता है। समाज के समुचित विकास, उसकी शांति एवं समृद्धि के लिए सुशासन पहली शर्त होती है।

सामान्यतः जब लोग अच्छे या बुरे प्रशासन की बात करते हैं तो उनका इशारा कार्यपालिका की ओर होता है जो प्रशासन के शेष दो अंगों के बारे में भूल जाते हैं। साथ ही, वे अन्य पक्षों को भी भूल जाते हैं जो प्रशासन के स्वरूप के निर्धारण में भागीदार होते हैंआम जनता खुद, मीडिया और इसकी तरह के अन्य। प्रशासन के अच्छे या बुरे स्वरूप के निर्धारण में सभी का हाथ होता है–कम या अधिक। बिना लोगों की भागीदारी बिना लोगों की आवाज और बिना लोगों के प्रतिनिधित्व के किसी भी कार्यक्रम का कार्यान्वयन महज यंत्रवत होगा। राजनीतिक लाभ उठाने और विरोध के नाम विरोध करते रहने से राष्ट्र का अहित होता है। रचनात्मक विरोध प्रजातंत्र की आत्मा, सुशासन का प्राण है। यह आवश्यक है कि विपक्ष कार्यपालिका पर जागरूक नजर और सतत् निगरानी रखे, लेकिन साथ यह भी जरूरी है कि ऐसा करने में उसकी नियत निरंतर रचनात्मक हो। न्यायिक समीक्षा के तहत पारित आदेशों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से पूर्व विधायकों और सांसदों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे उनका पूरी तरह अध्ययन, विचार विश्लेषण प्रत्येक .ष्टिकोण से कर लेंगे। सुशासन की स्थापना एवं संचालन–परिचालन में सरकार के विधायिका अंग का भी दायित्व बनता है,इस तथ्य को हमेशा ध्यान में रखकर कार्यवाही की जानी चाहिए।सुशासन के सामने मुख्य चुनौति सामाजिक विकास से जुड़ी हुई। 14 अगस्त, 1947 बिहार की आत्मा में राजनीति बसती है। राजनीति के बिना आप बिहार की कल्पना नहीं कर सकते हैं। खेत–खलिहान से लेकर मंच और मंचान तक सिर्फ राजनीति। भारत के पौराणिक ग्रंथों रामायण और महाभारत दोनों के कई प्रसंग बिहार से जुड़े हैं। मगध साम्राज्य का केंद्र भी बिहार ही था। महात्मा गांधी के प्रयोग को पहली सफलता और ऊर्जा बिहार से मिली। 1857 के विद्रोह का केंद्र भी बिहार ही था।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रजनी कोठारी, (2010) भारत में राजनीति कल और आज, अनुवादक अभय कुमार दुबे वाणी प्रकाशन सी.एस.डी.एस दिल्ली. पृष्ठ–416
2. उत्पल कुमार, (2013) बहुसंस्.तवाद असमिता एवं पहचान की राजनीति सम्पादक एम.पी.सिंह व हिमा राय, भारतीय राजनीतिक प्रणाली हिन्दी माध्यम क्रियान्वयन निदेशालय, दिल्ली, पृष्ठ–512–513
3. एम एल झिगन (2013), विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन वृन्दा पब्लिकेशन प्रा.लि. दिल्ली, पृष्ठ–436–438

4. ओपी, गावा, इनसाइकलोपीडिया ऑफ पोलिटिकल साइंस, ए मयूर पैपर बैक्स, नोएडा, उ0प्र0, पृष्ठ–576
5. एम.एल झिगन (2013), विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन, वृन्दा पब्लिकेशन प्रा.लि दिल्ली, पृष्ठ–446–448
6. योगेन्द्र यादय व सुहास पालशिकर, फ्राम हेजीमोनी टू कन्वर्जन्स पार्टी सिस्टम एण्ड इलेक्टोरल पोलिटिक्स इन द इण्डियन स्टेट्स 1952–2002 ईकोनामिका एण्ड पोलिटिकल वीकली, दिल्ली
7. अभय कुमार दुबे, लोकतंत्र के सात आध्याय, वाणी प्रकाशन, सी.एस.टी. एस. नई दिल्ली
8. उत्पल कुमार (2013), 'बहुसंस्तिवाद, अस्मिता एवं पहचान की राजनीति, सम्पादक एम.पी. सिंह व हिमाशु राय, भारतीय राजनीतिक प्रणाली हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली पृष्ठ–509–510

A Critical Study Of Mcrostrip Antenna

Dr. Shankar Prasad Singh*

Most of our knowledge concerning the biological effects of radio-frequency (RF) radiation from wireless communication vices came out of investigations conducted using experimental animals, such as rats, mice, etc. When it comes to the impact of RF radiation on human health and safety, epidemiology can play a pivotal role, because it is a study of the distribution of disease and its determinants in human populations.

In aircraft and spacecraft and spacecraft applications, where size, weight, cost, performance of installation, and aerodynamic profile are constraints low profile antenna may be required. To meet these specifications microstrip antennas can be used. These antennas can be flush-mounted to mental or other existing surfaces, and they only reason only require space for the feed line which is usually placed behind the ground plane. Major operational disadvantages of microstrip antennas are their inefficiency and their very narrow frequency bandwidth which is typically only a fraction of a percent or at most a few percent.

Microstrip antennas consist of a very thin ($t << N$) metallic strip (patch) placed a small fraction of a wavelength ($h << 2$) above a ground plane. The strip (Patch) and the ground plane are separated by a dielectric sheet. The radiating elements and the feed lines are usually photo etched on the dielectric substrate. The radiating patch may be square, rectangular, circular, elliptical, or any other configuration. Square, Rectangular, and circular are the most common because of ease of analysis and fabrication. The feed line is often also a conducting strip, usually of smaller width.

Coaxial-line feeds where the inner conductor of the coax is *attached to radiating patch, are also widely used. Linear and* circular polarizations can be achieved with microstrip antennas. Arrays of microstrip element, with single or multiple feeds, may also be used to obtain greater directives.

***Assistant Professor Dept. of Physics L.N. College, Bangaon B.N.M.U. Madhepura, Bihar**